RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

परम्परागत खेलों का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव : एक अध्ययन

होगाडे संतोष गुरूनाथ

शोधार्थी, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान

प्रस्तावना

खेल व्यक्ति का सामाजीकरण करता है। इस धारणा को मुख्यतः सामाजिक–मनौवैज्ञानिक मान्यता प्रदान करते हैं क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है और समाज द्वारा स्वीकृति प्राप्त करता है। खेल उसे समाज में रहना सिखाते हैं और सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने के गुण भी प्रदान करते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि बच्चे टोलियां बना कर खेलते हैं जो 'खेल' द्वारा व्यक्ति के सामाजीकरण का द्योतक है परन्तु कई खेल व्यक्ति अकेले भी खेलता है। विशेषकर बच्चा अपने खिलौनों के साथ अकेला खेलना पसन्द करता है। यहाँ तक कि वह खेल में इतना रम जाता है कि उसे आस–पास का ध्यान भी नहीं रहता। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की दौड़ें दौड़ना, गोला फैंकना, भाला फैंकना, कूदना आदि शारीरिक क्रियाएं व्यक्तिगत होती है।

ऐस खेल जो सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव में खेले जाते रहे हैं तथा जिनके खेले जाने से हमारी संस्कृति की परम्पराओं का आभास होता है, ऐसे खेलों को परम्परागत खेल कहा गया है।

भारत देश में बहुत सारे परम्परागत खेल खेले जाते रहे हैं, जैसे – कबड्डी, गुत्था दड़ी, गर्दन युद्ध, कुश्ती, कुरकांई, हाथदड़ा, मारधड़ी, गुल्ली डंडा, गुलेल, लुकाछिपी, ऊँट दौड़, घोड़ा कबड्डी, तीन टांग कूद, लम्बी कूद, ऊँची कूद, गोला फेंक, भाला फेंक, तस्तरी फेंक, हॉकी एवं तैराकी इत्यादि।

शोधकर्ता के अनुसार सभी स्कूलों में परम्परागत खेलों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि बिना किसी लागत के शारीरिक एवं मानसिक विकास हो सके। ये ऐसे खेल हैं जो कभी भी किसी भी स्थान पर खेले जा सकते हैं।

अध्ययन का महत्व :–

खेल एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है जो आनन्द एवं स्वतन्त्रता से युक्त होती है। यह प्रवृत्ति सभी प्राणियों में पायी जाती है। सभी आयु के व्यक्ति किसी न किसी प्रकार के खेल में व्यस्त रहते हैं। खेल की प्रवृति, अनुकरण, रचना, युयुत्सा आदि में विद्यमान रहती है।

खेल व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों प्रकार के होते हैं परन्तु सामूहिक प्रवृत्ति के उद्देश्य जितने व्यापक होते हैं व्यक्तिगत प्रवृत्तियों के उतने नहीं होते। सामूहिक प्रवृत्तियां बालकों को समस्त भेदभाव भुला कर टीम भावना से कार्य करने को प्रेरित करती है यहीं से बालकों का सामाजिक विकास भी होता रहता है। सामूहिक प्रवृत्तियां हमें नियम पालन के लिए तैयार करती हैं साथ ही बिना आपसी राग, द्वेष, ईर्ष्या आदि के खेल भावना से खेलने के लिए प्रेरित करती है।

इस प्रकार शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध में परम्परागत खेलों को खेलने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के स्तरों को जानने का प्रयास किया गया है, जिसके परिणामों से शिक्षा जगत में यह तथ्य सामान्य हो पायेगा कि खेल खेलने वाले विद्यार्थियों की क्षमताओं का मापन किस प्रकार होगा? तथा उनके लिए जीवन निर्देशन कैसा होना चाहिए? आदि प्रश्नों का उत्तर मिल सकेगा।

अध्ययन का औचित्य :–

किसी भी अनुसंधान या शोधकार्य का औचित्य अवश्य होता है क्योंकि अनुसंधानकर्त्ता या शोधकर्त्ता औचित्य को ध्यान में रखकर ही संबंधित शोधकार्य का चुनाव करता है। इसी प्रकार शोधकर्त्ता ने भी अध्ययन के औचित्य को ध्यान में रखकर ही इस विषय का चुनाव किया है।

पूर्ववर्ती अनुसंधायकों के अध्ययनों का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि कुछ अनुसंधायकों ने समस्या में लिये गये किसी एक चर पर अध्ययन किया है तथा कुछ अनुसंधायकों ने किसी दूसरे चर पर अध्ययन किया है। शोधकर्ता ने अध्ययन हेतु जिस समस्या का चयन किया है उस पर कोई भी अनुसंधान अभी तक प्रकाश में नहीं आया है यह पक्ष अछूता रह गया है इसलिए शोधकर्ता ने अपने अध्ययन हेतु समस्या का शीर्षक ''परम्परागत खेलों का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव : एक अध्ययन'' चयनित किया है और इस पर अध्ययन करने का निश्चय किया। अनुसंधानकर्ता की मान्यता है कि प्रस्तुत शोध के जो परिणाम एवं निष्कर्ष प्राप्त होंगे वे निश्चित रूप से शिक्षा जगत एवं आधुनिक खेलों में अपना आंशिक योगदान अवश्य देंगे।

समस्या कथन :–

परम्परागत खेलों का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव : एक अध्ययन

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. परम्परागत खेलों का शारीरिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिसीमन :–

1. प्रस्तुत शोध परम्परागत खेलों की सूची तैयार करने हेतु लातूर तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध के प्रायोगिक कार्य हेतु जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय तक ही सीमित रखा गया है।
3. परम्परागत खेलों में कबड्डी एवं कुश्ती खेलों पर प्रायोगिक कार्य किया गया है।

शोधविधि :–

प्रस्तुत शोध में उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्ता द्वारा दत्त संकलन हेतु प्रयोगात्मक शोध विधि, सर्वेक्षणात्मक शोध विधि व विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध गुणात्मक तथा मात्रात्मक अर्थात् मिश्रित शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष निरूपण –

परम्परागत खेल (कुश्ती) के प्रशिक्षणोपरांत छात्रों के व्यक्तित्व विकास पर पड़ने वाले प्रभाव मापनी में दोनों समूह के मध्यमानों का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि छात्रों के पूर्व परीक्षण का मध्यमान पश्च परीक्षण के मध्यमान से अल्प मात्रा में कम है। अतः यह कहा जा सकता है कि छात्रों को दिए गए कुश्ती के प्रशिक्षण के उपरान्त उनके शारीरिक विकास में बढ़ोतरी होती है।

परम्परागत खेल (कबड्डी) के प्रशिक्षणोपरांत छात्रों के व्यक्तित्व विकास पर पड़ने वाले प्रभाव मापनी में दोनों समूह के मध्यमानों का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि छात्रों के पूर्व परीक्षण का मध्यमान पश्च परीक्षण के मध्यमान से अल्प मात्रा में कम है। अतः यह कहा जा सकता है कि छात्रों को दिए गए कबड्डी के प्रशिक्षण के उपरान्त उनके शारीरिक विकास में बढ़ोतरी होती है।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

1. पाठक. पी.डी. 1996. शिक्षा मनोविज्ञान. विनोद पुस्तक मन्दिर. आगरा
2. भटनागर. डा.आर.पी. 1993. शिक्षा अनुसंधान. ईगल–बुक्स इन्टरनेशनल. मेरठ
3. भार्गव. महेश 1982. आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, हरप्रसाद भार्गव. आगरा
4. मंगल, एस. के. एवं भाटिया, एम. एम. 1994 खेल मनोविज्ञान, साहित्य भवन. आगरा
5. रायजादा. बी.एस. 1997. शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी. जयपुर
6. वैद्य, नरेन्द्र. 1976. एच.पब्लिसिंग कम्पनी. नई दिल्ली. बोम्बे. कलकत्ता
7. शर्मा, आर. डी. 1982. स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा पृष्ठ संख्या 185

RRIJM 2015, All Rights Reserved